* तारण-शब्द-कोष *

—(दो-खण्ड)—

लेखक—

श्री क्षुल्लक जयसेन महाराज

प्रकाशक—

श्रीमान् सेठ कुन्दनलाल हजारीलाल जी,
हैदरगढ़ बासोदा (ग्वालियर)

प्रथमावृत्ति	वीर सम्वत २४६६	मूल्य—
१०००	तारण सं० ४२४	अध्ययन

सावधान !

यह ग्रन्थ आपका परम पवित्र धार्मिक शास्त्र है, अतएव विनय भाव-पूर्वक सम्हाल कर रखिये। इस इक्कीसवी सदी के प्रारंभ मे प्रकाशित तारण साहित्य का भले प्रकार संग्रह करना प्रत्येक सद्गृहस्थका परम कर्तव्य है।

विनीत—

शंकरलाल जैन।

धन्यवाद

यह 'तारण-शब्द-कोष श्रीमान् सेठ कुन्दनलाल जी हजारेलाल जी हैदरगढ़ बासोदा (ग्वालियर) वालों की ओर से प्रकाशित होकर वितरण हो रहा है, अतएव उक्त दानी श्रीमान् सेठ सा० का परिचय आगे दिया जाता है।

इस ग्रन्थ के द्वारा समाज को कुछ लाभ अवश्य होगा। इस भावना से श्री क्षुल्लक जी महाराज ने इसे लिखा है। यदि कोई त्रुटियां रह गई हों तो विद्वान सज्जन सुधार लें।

—ब्र० गुलाबचन्द।

प्रस्तावना

यह शब्द कोष-मुमुक्षुवृन्द, विद्यार्थी मण्डल, तथा पांडेजी-वर्ग की बडे काम की चीज है। मेरी रायसे तो प्रत्येक पाठशालाओं के कोर्ष में रखकर इसे प्रत्येक बालक को पढा देना बड़ा ही लाभकारी है।

इस कोष ग्रन्थ में श्रीमत्परमपूज्य गुरुवर्य तारण स्वामी जी कृत आठ ग्रन्थों के शब्दों का अर्थ सहित संग्रह (चुनाव) है।

इसके, दो खंड तो यह एक साथ छप रहे है। शीघ्र तीसरा खंड तैयार होकर अलग छपेगा।

तारण-शब्द-कोष के प्रकाशक श्रीमान् सेठ
कुन्दनलाल जी साहेब का

संक्षिप्त परिचय

श्रीमान् सेठ जमनादास जीके सुपुत्र सेठ लखमीचंद जी, इनके सुपुत्र सेठ कुन्दनलाल जी हजारीलाल जी ये दोनों भ्राता बडे ही सरल स्वभावी शान्त एवं धर्मप्रेमी और दानी हैं आपकी ओर से दो मेले तो श्री क्षेत्र सेमरखेडी जी पर लग चुके हैं तथा तीसरा यह विशाल मेला श्री निसई जी (मल्हारगढ़) पर लग रहा है। गत वर्ष श्री क्षुल्लक महाराज के दीक्षोत्सव के समय भी आपने क्षेत्र सेमरखेडी जीको १०००) एक हजार रुपया तथा तारण तरण पाठशाला वासोदा को ५००) रुपया दान स्वरूप प्रदान किया था। इस प्रकार आपने अपने जीवन में तीन मेले श्री तारण तीर्थ क्षेत्रों पर लग चुके हैं। व अभीतक का अपना जीवन दान धर्मादिक शुभ कार्यों में ही लगा है, आगे भी आप इसी

प्रकार धर्म-एवं-समाज के उन्नति-कारक कार्यों में सहयोग देते रहेंगे ऐसी आशा है आपके काका साहिब श्रीमान् सेठ जवाहरलाल जी भी हैदरगढ़ वासौदा में ही रहते हैं तथा आप भी धर्मप्रेमी हैं।

उपर्युक्त कुटुम्ब तारण समाज छहसंघ के असहठी संघ में से है। आपके पहले मेला सं० ८३ के दरम्यान ही क्षेत्र सेमरखेड़ी जी पर षट् संघ तारण समाज का सम्मेलन हुआ था तब से अब तक समाज का परस्पर-खान-पान व विवाहादि संबंध अच्छी तरह हो रहा है। और अब तो छह संघ का नाम सिर्फ कहने के लिये है किन्तु सब का अब सामूहिक संगठन होकर 'तारण-समाज' रूप से ही नाम 'व्यवहृत' होता है।

हम उक्त सेठ सा० की पुण्य-वृद्धि की प्रार्थना जिनेन्द्रदेव से करते हैं।

शुभं-भूयात्

विनीत—शंकरलाल जैन कुंडा।

क्षमा-प्रार्थना

हम से जहां तक बुद्धि अनुसार हो सका है साहित्यानुकूल ही शब्दों का अर्थ लिखने की कोशिश की है। फिर भी सम्भव है, अल्पज्ञतावश त्रुटियां रह गई होंगी, अनुभवी सज्जनों से क्षमा प्रार्थना-पूर्वक उन त्रुटियों के सुधारने का साग्रह निवेदन है। तथा सूचना मिलने पर द्वितीयावृत्ति में संभाल हो जावेगी। तारण समाज की प्रत्येक संस्था में यह कोष बालकों को नियमित रूप से पढ़ाया जावे तो उत्तम है।

—जयसेन

श्री परमगुरवे नमः ॥

तारण-शब्द-कोष

(प्रथम खण्ड)

मंगलाचरण

शुद्धातमा जिनका सुरत्नत्रय निधीका कोष था ।
रमण करते थे सदा निजमें जिन्हें सन्तोष था ॥
तारणतरण गुरुवर्य के चरणारविन्दों में सदा ।
हो नमन बारंबार निज गुण दीजिये शिवशर्मदा ॥

प्रथम आशीर्वाद "उव उवन्न उवम्य रमणं" में आये हुए शब्दों का प्रकरणानुसार अर्थ

१–	उव	ओंकार या शुद्धात्मा।
२–	उवन	उदय।
३–	उवन्न	उत्पन्न करना।
४–	उवम्य रमण	उसी में रमण करना।
५	दिप्तं	देदीप्यमान, उज्वल अथवा निर्मल प्रकाशमय।
६	दृष्टिमय	दृष्टि सहित या (ज्ञाता) दृष्टा।
७–	हिययारं	हितकारी।
८–	अर्क	प्रकाश या सूर्य।
९–	विन्द	निर्विकल्प।
१०–	प्रायोजितं	प्रयोजन भूत।
११–	सहयारं	सहकारी या उपकारी।
१२–	सह	सहित या साथ।
१३–	नंत	अनन्त।

१४—	ममलं	निर्मल या शुद्ध ।
१५—	उववन्नं	उत्पन्न करो ।
१६—	धुवं	ध्रुव, निश्चल, अविनाशी
१७—	सुयदेवं	श्रुतदेवता या जिनवाणी
१८—	मुक्ते	मुक्ति या मोक्ष ।
१९—	जयं	वृद्धि हो, जयवन्त हो ।

—(२)—

दूसरा आशीर्वाद (जुगयं खंड सुधार०) में आये हुये शब्दों का प्रकरणानुसार अर्थः—

२०—	जुगयं	जुग, जोडा या दो वस्तुएं मिली हुई । आत्मा और पुद्गल का जोडा या जोग)
२१—	खण्ड	जुदा करना ।
२२—	सुधार	हित या कल्याण ।
२३—	रयण	रत्न या रत्नत्रयमय ।
२४—	अनुवं	अनुपम, (उपमारहित)

२५-	निमिखं	निमिष या क्षणमात्र।
२६--	घटयं	घड़ी।
२७-	तुज्ज	तू, तुम, या आप।
२८	मुहूर्त	४८ मिनिटका १ मुहूर्त
२९	प्रहरं	प्रहर (३ घंटेका १ प्रहर)
३०--	चत्रु	चार।
३१	दिमरयणी	दिम (दिन) रयणी (रात्रि)
३२-	सुभावं	स्वभाव।
३३--	जिनं	जीतना।
३४-	खिपंति	क्षय होना।
३५ -	कलिनो	सहित या शोभायमान।
३६ -	दिप्ते	देदीप्यमान।

—(३)—

तृतीय आशीर्वाद (वे दो छंद विरक्त०) में आये हुए शब्दों का प्रकरणानुसार अर्थ—

३७--	वे, दो	वह दो राग, द्वेष।
३८--	छंद या छंड	त्याग करो। छंद (कपट)

३९--	दिढियो	दृढ होना।
४०--	कायोत्सर्गगामिनो	देह से ममत्व छोडना।
४१--	केवलिनो	केवली भगवान का।
४२--	लोयालोय	लोकालोक।
४३--	पेप पिपर्ग	अच्छी तरह देखना या परीक्षा कर लेना।
४४--	नृत	मार्ग।
४५-	दल	समूह।
४६-	च	और।
४७-	प्रकाशिनो	प्रकाश करने वाले।
४८--	सुयदेवं	श्रुतदेवता या जिनवाणी।
४९	जुग आदि	चतुर्थ काल का प्रारम्भ।
५०	श्री संघं जयं	श्री संघ जयवन्त हो।
५१	संघ	समूह या चार संघ।

—(४)—

'उत्पन्न रंज प्रवेश गमन' इस आशीर्वाद में आये हुए शब्दों का प्रकरणानुसार अर्थ—

५२	उत्पन्न	जिनवाणी।

५३	रंज	रंगजाना, रंजायमान, या हर्षित प्रफुल्लित होना
५४	प्रवेश	हृदय मे धारण करना ।
५५	गमन	उसी के अनुसार चलना ।
५६	छदमस्थ स्वभाव	अल्प ज्ञानी ।
५७	दुःखेन विलयगता	दुःखों से छूटना ।

— ४)—

श्री पण्डित पूजा ग्रन्थ मे आये हुए शब्दों का प्रकरणानुसार अर्थ :—

५८	ओंकारस्य	शुद्धात्मा, या सिद्ध ।
५९	ऊर्धस्य	सर्वोत्कृष्ट, या उच्च ।
६०	ऊर्ध	सर्वोत्कृष्ट, या उच्च ।
६१	सद्भाव	जिसका कभी नाश नही होगा
६२	शाश्वतं	अविनाशी ।
६३	विन्दस्थानेन	निर्विकल्प, मोक्ष-स्थान ।
६४	तिष्ठन्ति	रहते हैं ।

६५	निश्चय	यथार्थ, सत्यार्थ, निश्चयनय
६६	नय	अपेक्षा।
६७	जानन्ते	जानते हैं।
६८	विधीयते	विधान या प्राप्ति।
६९	योगी	जो मन, वचन, काय को वशमें रखता हुआ आत्माका ध्यान करे सो योगी।
७०	पण्डितो	हेयोपादेय-विवेक बुद्धि जिस के पास हो सो पण्डित।
७१	पूजा	जिसके भावों मे पवित्रता आवे सो पूजा।
७२	उवंकारं	ओंकार।
७३	अचक्षुदर्शन	अतीन्द्रिय (स्वसंवेदनगम्य)
७४	अंकुरणं	अकूर।
७५	वीर्यं	शक्ति।
७६	लोकितं	देखना।
७७	त्रि अर्थ	तीन अर्थ— सम्यग्दर्शन,

		सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र।
७८	चेतना	चैतन्य शक्ति या ज्ञान-दर्शन स्वभाव युक्त।
७९	त्रिभुवनं	तीन भुवन या तीन लोक।
८०	निकंदन	दूर करना।
८१	प्रक्षालित	धोना, साफ शुद्ध करना, या प्रक्षालन।
८२	असुह	अशुभ।
८३	त्रिविधि कर्म	द्रव्यकर्म, भावकर्म, नोकर्म।
८४	तित्तयं	त्याग करना।
८५	समय	आत्मा।
८६	अन्यानतन	अनायतन (गाथा १९वीं)
८७	अदेवं	जिसमें सुदेव और कुदेव-पने का अभाव हो।
८८	अगुरु	जिसमें सुगुरु और कुगुरुपने का अभाव हो।
८९	अधर्म	जिसमें सुधर्म और कुधर्म-पने का अभाव हो।

"श्री माला रोहण" में आये हुए शब्दों का अर्थ :—

९०	वेदान्त	ज्ञान की अन्तिम सीमा।
९१	सार्धं	श्रद्धान।
९२	धरेत्वं	धारण करना चाहिये।
९३	लंकृत	शोभायमान।
९४	रुलितं	रुलन या नित्य मनन।
९५	बहुभेयं	बहुत भेद।
९६	त्यक्तं	त्याग करके।
९७	दृष्टं	देखा।
९८	हृदि	हृदय।
९९	अन्या	आज्ञा।

—(७)—

"श्री कमल बत्तीसी ग्रन्थ" में आये हुए शब्दों का अर्थः—

१००	सद्दहनं	श्रद्धा करना।

१०१	अरजक भाव	जिन भावोंसे बिना फल दिये झड़ जाने वाले कर्मोंका बंध हो, या ईर्यापथ आस्रव रूपी भाव, जैसे सूखे घड़े पर पडी हुई रज (धूल) उड़ जावे।
१०२	अन्मोयं	आनन्दमय या अनुमोदन।
१०३	जिनयति	विभाव भावों को जीतना।
१०४	प्रजाव	पर्याय या शरीर।
१०५	गलयति	गल जाना।
१०६	विलयं	विलायमान हो जाना।
१०७	खिपनं	क्षय करना।
१०८	चेयनि	चैतन्य।
१०९	जनरंजन	अपने से भिन्न जीवों को रंजायमान (प्रसन्न) करने का प्रयत्न सो जनरंजन।
११०	कलरंजन	अपने शरीर को शृङ्गार युक्त करके अपने आप प्रसन्न होना सो कलरंजन।

१११	मनरंजन	सांसारिक विभूतियों में राग, द्वेष, मद (गौरव) आदि कर के अपने मन को रंजायमान करना सो मनरंजन।
११२	परमेष्ठी	जो उत्कृष्ट पद में स्थित हों।
११३	पंचाचार	१ दर्शनाचार, २ ज्ञानाचार ३ चारित्राचार, ४ तपाचार, ५ वीर्याचार ये पांच आचार्य परमेष्ठी के गुण हैं।
११४	पयडि	प्रकृति।
११५	कलिट्ट	दुःखी प्राणी।
११६	षट्कमलं	छह कमल निम्न प्रकार हैं:- १-विंदपद्म (ब्रह्माण्ड) २-कंठ-पद्म (कंठ) ३-हृदिपद्म (हृदय) ४-नाभिपद्म (नाभि) ५ गुह्य-पद्म (गुप्तकमल) ६-पदपद्म (चरण कमल)

११७	पर्जय	पर्याय या शरीर।
११८	न्यानंविन्यान	ज्ञान विज्ञान (भेद विज्ञान)
११९	अप्पा	आत्मा।
१२०	परमप्पा	परमात्मा।

—(८)—

श्री श्रावकाचार में आये हुए शब्दों का अर्थः

१२१	त्रैलोक्यं भुवन	तीन लोक रूपी महल।
१२२	रूपातीतं	पौद्गलिक रूप रहित।
१२३	विन्दु संजुत्तं	निर्विकल्पता युक्त।
१२४	विश्वलोकं	समस्त लोक।
१२५	विक्त रूपी	प्रगट निजरूपी।
१२६	पंचचेल	पांच प्रकार के वस्त्र १—अंडज (कोशा आदि) २— बुण्डज (कपास आदि) ३— वंकज (वल्कल आदि) ४— रोमज (रोम के कंबल) ५— चर्मज (चमड़े के)

१२७	सरवन्यं	सर्वज्ञ ।
१२८	णिग्गोयं	निगोद ।
१२६	कोहाग्नि	क्रोधाग्नि ।
१३०	तिक्तते	त्याग करते हैं ।
१३१	सप्तप्रकृति	आत्मा के सम्यक्त्व गुण को घातने वाली निम्न सात प्रकृतियां :— १-मिथ्यात्व २-सम्यक्मिथ्यात्व ३ सम्यक्प्रकृति ४—अनंतानुबंधी क्रोध, ५— अनंतानुबंधी मान ५— अनंतानुबंधी माया ६— अनंतानुबंधी—लोभ ।
१३२	शल्यं	तीन शल्य :— १-माया २-मिथ्या ३-निदान
१३३	अधर्म पाश	यह तीन विशेषण कुगुरू
१३४	अदेवं ताडकी	रूपी पारधी के हैं जो जीवों
१३५	विकहा जाल	को अपने जाल में फंसा कर

		नरक निगोदादि में डाल कर दुःख देते हैं।
१३६	अचेतं	अचेतन या जड़।
१३७	आरति	आर्तध्यान, इसके ४ भेद हैं। १–इष्ट वियोगज २– अनिष्ट-संयोगज ३– पीडा चिंतवन, ४– निदान।
१३८	रौद्रं	रौद्रध्यान, इसके भी ४ भेदहैं १–हिंसानंदी, २–मृषानन्दी, ३–चौर्यानंदी ४–विषयानंदी
१३९	धर्मं	धर्म ध्यान इसके भी ४ भेद हैं १–आज्ञाविचय २– अपाय-विचय, ३– विपाक विचय ४— संस्थान विचय।
१४०	शुक्लं	शुक्लध्यान, इसके भी ४ भेदहैं १-पृथक्त्व वितर्क २–एकत्व–वितर्क ३–सूक्ष्मक्रियाप्रतिपात

		४— व्युपरतक्रियानिवृत्ति ।
		नोट-इनका वर्णन श्री श्रावकाचार जी की टीका में है ।
१४१	विकहा	विकथा, इसके भी ४ भेद हैं— १—स्त्रीकथा, २—भोजनकथा, ३—राजकथा, ४- चोरकथा ।
१४२	विसनं	व्यसन, इसके ७ भेद हैं:— १- जुआ खेलना, २- मांस-भक्षण, ३-मद्य पान, ४-वेश्या सेवन, ५- शिकार खेलना, ६-चोरी करना ७-परस्त्री सेवन
१४३	विदलं	द्विदल, अर्थात् कच्चे दूध दही मही के साथ दो दाल वाली चीजों का खाना; यह अभक्ष्य है ।
१४४	फल सम्पूर्णं	पूरा फल, यह भी अभक्ष्य है कोई भी फल तोड़ फोड़ कर ही खाना योग्य है ।

१४५	अभ्रपटलं	मेघ पटल।
१४६	त्रिअर्थं	तीन अर्थ, १- सम्यग्दर्शन, २- सम्यग्ज्ञान, ३- सम्यक्चारित्र, या १ ॐ, २ ह्रीं, ३ श्रीं।
१४७	पादस्थं आदि	ध्यान के और भी ४ भेद हैं १- पदस्थ ध्यान २- पिण्डस्थ ध्यान, ३- रूपस्थ ध्यान, ४- रूपातीत ध्यान।
१४८	कुन्यानं त्रति	तीन कुज्ञान, १- कुमति ज्ञान, २-कुश्रुतज्ञान ३-कुअवधि ज्ञान
१४९	तत्वं	सात तत्व, १- जीव २-अजीव ३- आस्रव ४- बंध ५- संवर ६- निर्जरा, ७- मोक्ष।
१५०	पादार्थं	९ पदार्थ, अर्थात् उक्त ७ तत्वों में पुण्य, और पाप ये दो को और गिनने से ९ पदार्थ होते हैं।

१५१	दब्बं	द्रव्य छह होते हैं— १- जीव द्रव्य, २-पुद्गल द्रव्य, ३- धर्म द्रव्य ४- अधर्म द्रव्य ५-आकाश द्रव्य ६-काल द्रव्य नोट- इन्हीं ६ द्रव्यों में से काल को छोड़ कर ५ द्रव्य अस्तिकाय हैं।
१५२	कोशी	कौशिक अर्थात् घूघू या उल्लू दिन में अंधा होता है।
१५३	भास्करं	सूर्य।
१५४	विचक्खणा	विचक्षण या चतुर।
१५५	कषायं	कषाय, इसके २५ भेद निम्न प्रकार जानना :— ४ अनंतानुबंधी, ४ अप्रत्याख्यानावरण, ४ प्रत्याख्यानावरण, ४ संज्वलन, ९ नोकषाय।

१५६	सम्मत्तं	सम्यक्त्व, ३ भेद हैं-— १-उपशम २-वेदक ३-क्षायिक
१५७	षट्कर्म	श्रावक के नित्य करने योग्य ६ कर्म :— १ देव पूजा, २ गुरूपासना, ३ स्वाध्याय, ४ संयम, ५ तप, ६ दान।
१५८	संयमं	६ काय के जीवों की रक्षा तथा ५ इन्द्रिय, व मन को वश में रखना।
१५९	तप	इच्छा का निरोध करना, इसके बारह भेद हैं :—

(बहिरंग)
१— अनशन।
२— ऊनोदर।
३— व्रतपरिसंख्यान
४— रसपरित्याग
५— विविक्त शयनासन
६ - कायक्लेश।

(अन्तरंग)
७— प्रायश्चित।
८— विनय।

९- वैयावृत्य	११-- व्युत्सर्ग ।
१०- स्वाध्याय	१२-- ध्यान ।

१६० दान	चार प्रकार, १- आहार दान, २- औषधि दान, ३- अभय-दान, ४- ज्ञान दान।
१६१ प्रतिमा एकादशं	ग्यारह प्रतिमा :— १-दर्शन प्रतिमा २-व्रत प्रतिमा ३- सामायिक प्रतिमा । ४- प्रोषधोपवास प्रतिमा । ५- सचित्त त्याग प्रतिमा । ६-रात्रिभोजन त्याग प्रतिमा । ७- ब्रह्मचर्य प्रतिमा । ८- आरंभत्याग प्रतिमा । ९- परिग्रहत्याग प्रतिमा । १०- अनुमति त्याग प्रतिमा । ११- उद्दिष्ट त्याग प्रतिमा ।
१६२ स्वाध्याय	शास्त्राध्ययन करना, इसके

		पांच भेद हैं— १- वाचना, २- पृछना, ३- चिन्तवन, ४- कंठस्थ करना, ५- धर्मोपदेश देना।
१६३	अनुयोग	अनुयोग चार हैं :— १-प्रथमानुयोग २-चरणानुयोग ३-द्रव्यानुयोग, ४-करणानुयोग
१६४	अणुव्रत	पांच हैं —१ अहिसाणुव्रत, २ सत्याणुव्रत ३ अचौर्याणु-व्रत ४- ब्रह्मचर्याणव्रत, ५- परिग्रह परिमाणाणुव्रत।
१६५	गुणव्रत	तीन हैं, १ दिग्व्रत २ देशव्रत ३ अनर्थदण्डत्याग।
१६६	शिक्षाव्रत	चार हैं :— १ सामायिक, २ प्रोषधोपवास ३ भोगोपभोग प्रमाण ४ अतिथिसंविभाग। नोट— उपरोक्त, ५ अणुव्रत,

		३ गुणव्रत, ४ शिक्षाव्रत, ये १२ श्रावक के व्रत हैं।
१६७	मलपंचवीसं	सम्यग्दर्शन के २५ दोष— ८ मद, ८ शंकादि दोष, ६ अनायतन ३ मूढ़ता।
	आठ मद—	१ ज्ञान-मद, २ पूजा-मद, ३ कुलमद, ४ जातिमद, ५- बलमद, ६- ऋद्धिमद, ७- तपमद, ८- शरीरमद, ये आठ मद के भेद हैं।
	आठ शंकादिदोष—	१- शंका, २- कांक्षा, ३- विचिकित्सा, ४- मूढदृष्टि, ५-अनुपगूहन, ६- अस्थितिकरण ७-अवात्सल्य, ८-अप्रभावना,
	छह अनायतन-	१ कुदेव प्रशंसा, २ कुगुरु-प्रशंसा, ३- कुधर्म प्रशंसा, ४- कुदेवोपासक प्रशंसा,

		५– कुगुरु उपासक प्रशंसा , ६– कुधर्मोपासक प्रशंसा ।
	तीन मूढ़ता·–	१–लोकमूढ़ता, २-देवमूढता, ३– पाखण्ड–मूढ़ता ।
१६८	सोडषकारणं	जिनसे तीर्थङ्कर प्रकृति का बंध होता है ऐसी १६ भावना- १- दर्शन विशुद्धि, २- विनय सम्पन्नता , ३– अनतिचार शीलव्रत ४ अभीच्ण ज्ञानोपयोग ५ संवेग ६ शक्तितस्त्याग ७ शक्तितस्तप ८ साधुसमाधि ९- वैयावृत्य, १०- अर्हद्भक्ति, ११ आचार्यभक्ति १२ बहुश्रुत-भक्ति, १३– प्रवचन भक्ति, १४– आवश्यकापरिहाणि, १५– मार्ग–प्रभावना, १६– प्रवचन–वत्सलत्व ।

१६९	कन्दवीयं	कन्दबीज, जमीकंद।
१७०	ऊर्ध	उच्च।
१७१	अर्ध	नीचे, तथा अर्ध (आधा)
१७२	जोयं	देखना।
१७३	जत्र	जहां।
१७४	तत्र	तहां या वहां।
१७५	तिविहं	त्रिविधि, (तीन प्रकार)
१७६	जोगं	योग (मन, वचन, काय)
१७७	तवं	तप।
१७८	अनृतं	असत्य।
१७९	नरयं	नरक सात होते हैं— १- घम्मा, २- वंशा, ३ मेघा, ४- अन्जना, ५- अरिष्टा, ६- मघवी, ६- माघवी।
१८०	मदष्टं	मद आठ।
१८१	वक्कं	वक्र या कुटिल (टेढ़ा)
१८२	कूड	क्रूर, दुष्ट, दुर्जन।

१८३	प्रयोजनं	प्रयोजन, मतलब ।
१८४	पंचदिप्ती	पंच परमेष्ठी, पंचज्योति ।
१८५	सुयं	स्वयं, अपने आप ।
१८६	संजमं	संयम ।
१८७	दुतीय	द्वितीय ।
१८८	णीच, इत्र	नित्य, इतर निगोद ।
१८९	अप	जलकाय ।
१९०	तेज	अग्निकाय ।
१९१	वायं	वायुकाय ।
१९२	विकलत्रयं	दोइंद्रिय, तीनइंद्रिय, चारइंद्रिय
१९३	जोयनि	योनि (जीव के उत्पन्न होने के स्थान) ८४ लाख ।
१९४	भेषजं	औषधि दान ।
१९५	गवं	गाय ।
१९६	त्रणं	घास ।
१९७	स्वर्गामिनो	स्वर्ग जाने वाले ।
१९८	निपातये	गिराना ।

१९९	प्रमोदनं	प्रमोद, आनन्द।
२००	अभ्यागतं	अतिथि, पड़गाहन, सत्कार।
२०१	दात्र	दातार।
२०२	अनस्तमती	अनथेऊ या रात्रि भोजन-त्याग
२०३	वे घडियं	दो घडी।
२०४	खादं	खाद्य आहार।
२०५	स्वादं	स्वाद्य आहार।
२०६	पीवं	पेय आहार।
२०७	लेपं	लेह्य या लेपाहार।
२०८	बासी भोजन	आजका बना कच्चा भोजन आदि कल खाना सो बासी-भोजन
२०९	बिलछंते	बिलछानी डालना, जहां का जल हो वहीं।
२१०	फासू	प्रासुक।
२११	देवाले	देवालय मंदिर या चैत्यालय
२१२	उपायदेव	उपाध्याय।
२१३	वय	व्रत।

२१४	पोसा	प्रोषधोपवास ।
२१५	बंभं	ब्रह्मचर्य ।
२१६	नृतं	सत्य ।
२१७	अस्तेयं	अचौर्य ।
२१८	अनेयं	अनेक ।
२१९	कमठी	मछली ।
२२०	डिंभ	अण्डा या बच्चा ।
२२१	मत्स्यका	मछली ।
२२२	अण्ड	अण्डा ।
२२३	रेतं	बालू, रेत ।
२२४	जल शयनी	मछली ।
२२५	तालकी टऊ	सरोवर का कीड़ा ।
२२६	इति	इस प्रकार ।
२२७	विरंचित	विरचित ।
२२८	सम उत्पन्निता	समाप्त ।

" श्री ग्रन्थराज न्याय समुच्चयसार " में आये हुए शब्दों का अर्थ :—

२२९	समुच्चय	समूह या समस्त ।
२३०	सार	प्रयोजन भूत ।
२३१	रिसहादि	ऋषभादि ।
२३२	किंचितु	थोडा ।
२३३	कहंतेन	कहते हुए ।
२३४	प्रबोधनं	सम्बोधन, उपदेश ।
२३५	गगनं	आकाश ।
२३६	दिनयरकिरनि	सूर्य की किरण ।
२३७	कदली	केला ।
२३८	पुलिनं	पोला या निःसार ।
२३९	प्रतख्यान	प्रत्याख्यान, (त्याग)
२४०	विद्यमानो	वर्तमान में उपस्थित ।
२४१	आराहणं	आराधन ।
२४२	प्राणमुखं	पराङ्मुख, विरुद्ध ।

२४३	अवकाशं	स्थान या समय ।
२४४	गोयते	गाया जाना, कथन ।
२४५	उन्मूलितं	उखाड डालना ।
२४६	निकन्दनं	नष्ट करना ।
२४७	ठिदि	स्थितिबन्ध ।
२४८	अणुभागं	अनुभागबन्ध ।
२४९	प्रकिर्ति	प्रकृति बन्ध ।
२५०	प्रवेशनं	प्रदेशबन्ध ।
२५१	मुणेयव्वो	जानना चाहिये ।
२५२	एरिसो	ऐसा ।
२५३	लिस्साऊ	लेश्याये ।
२५४	णिव्वुए	निर्वाण ।
२५५	जंति	जाता है ।
२५६	संवेऊ	संवेग (संसार दुःखों से भय या धर्म व धर्म-फल से प्रेम)
२५७	णिव्वेऊ	वैराग्य ।
२५८	वाछिल्लं	वात्सल्य ।

२५६	णिद्दन्दो	निर्द्वन्द।
२६०	भन्ती	भक्ति।
२६१	चउक्कं	चार।
२६२	सीहं	सिंह (शेर)
२६३	गयंद जूहेन	हाथियों का समूह।
२६४	दुःख बीयंमी	दुःख का बीज।
२६५	गुरुपसात	गुरु प्रसाद (कृपा) से
२६६	खिऊ	क्षय।
२६७	डंडकपाट	डंड, डंडा (अर्गला) कपाट (किवाड)
२६८	संकप्पवियप्पं	संकल्प, विकल्प।
२६९	पुग्गल	पुद्गल।
२७०	तुरियं	चौथा।
२७१	अलियं	अलीक (झूंठ)
२७२	मंक्कड	मर्कट (बन्दर)
२७३	चवलं	चंचल।
२७४	खिम	क्षमा।

२७५	साउच्यं	शौच ।
२७६	आलाप	वाणी ।
२७७	आभितर	अन्तरङ्ग ।
२७८	दिगम्बर	दिग् (दिशा ही) अंबर (वस्त्र)
२७९	महावय	महाव्रत ।
२८०	अयं	यह ।
२८१	कीलय	स्थिर ।
२८२	विरदो	विरक्त ।
२८३	मनपसरै	मन का फैलाव ।
२८४	आमन्य भव्व	निकट भव्य ।
२८५	आमोदर्ज	ऊनोदर तप ।
२८६	इत्थु	यहां का ।
२८७	प्राछितं	प्रायश्चित ।
२८८	झांणं	ध्यान ।
२८९	जिणहि	जिनेन्द्र द्वारा ।
२९०	विरयम्मि	विरक्त होना ।
२९१	सूत्र	संक्षेप या थोडे शब्दों में

		विशाल अर्थ कथन सो सूत्र।
२६२	अवगाहन	प्रवेश ।
२६३	चवन्तं	बोलना ।
२६४	संवरणं	संवर करना या संकोचना।
२६५	कुच्छिय	कुत्सित या खोटा।
२६६	डहनं	दहन (भस्म) करना।
२६७	रई	रति।
२६८	पाछीतो	पश्चात्।
२६६	अइसय	अतिशय।
३००	पडिहार	प्रतिहार्य।
३०१	पुहयि	पृथ्वी।
३०२	मिच्छा	पहला, मिथ्यात्व गुणस्थान
३०३	सासण	द्वितीय सासादन गुणस्थान
३०४	मिस्सो	तृतीय मिश्र गुणस्थान।
३०५	अविरइ	चतुर्थ अविरत सम्यग्दष्टि गुणस्थान ।
३०६	देसविरदं	५वां, देश विरत गुणस्थान।

३०७	पमत्तो	छठा प्रमत्तविरत गुणस्थान
३०८	अपमत्तो	सातवां अप्रमत्तविरत गुणस्थान
३०९	अपुव्व	आठवां अपूर्वकरण गुणस्थान
३१०	अणियत्त	नवमां अनिवृत्तिकरण गुणस्थान
३११	सूक्षम	दशवां सूक्ष्मसांपराय गुणस्थान
३१२	उवसंतकसाय	ग्यारहवां उपशांतमोह गुणस्थान
३१३	क्षीणमोह	बारहवां क्षीण मोह गुणस्थान
३१४	संयोगि जिनं	तेहरवां संयोगकेवली गुणस्थान
३१५	अजोग	चौदहवां अयोगकेवली गुणस्थान
३१६	टंकोत्कीर्ण	वज्र या पाषाण पर उकेरी गई
३१७	निहारं	मल मूत्रादि ।
३१८	ठाणं	स्थान ।
३१९	संसार साइरे	संसार सागर ।
३२०	सहजोपनीतं	सहज में उत्पन्न हुआ ।
३२१	उद्धगमऊ	उर्ध्वगामी ।
३२२	सुपयेसो	सुप्रवेश ।
३२३	जिनतारणरइयं	श्री जिन तारणद्वारा विरचित

श्री ग्रन्थराज "उपदेश शुद्धसार" जी में आये हुए शब्दों का अर्थ :—

३२४	उवएसं	उपदेश।
३२५	सीसाणं	शिष्यों को।
३२६	मनुवा पंखि	मन रूपी पक्षी।
३२७	चंचूवा	चोंच (मुख)
३२८	मणिरयणं	मणि, रत्न।
३२९	आकरणि	कानों से सुन कर।
३३०	मछ	मत्स्य या मछली।
३३१	इष्टं संजोय	इष्ट संयुक्त।
३३२	उववनं	उपवन (बगीचा)
३३३	सिंचत्ति	सींचता है।
३३४	उन्मूलं	उखाड़ना।
३३५	पण्डिय	पण्डित।
३३६	अस्मूह	समूह।
३३७	सुकीय	अपना।

३३८	फटिक सहावं	स्फटिक मणि के समान स्वभाव वाला।
३३६	रीणं	ऋण या कर्ज।
३४०	उवंनमापि	ॐ नमः भी।
३४१	वारं	जल।
३४२	जाव	जब तक।
३४३	ताव	तब तक।
३४४	वासंमि	निवास हो।
३४५	वपु	शरीर।
३४६	पखिक	पाचिक।
३४७	गारव	गर्व, अभिमान।
३४८	संसारंपषि	संसार का पच।
३४६	चदुगऐपत्तं	चतुर्गति का पात्र।
३५०	अजिनं	मिथ्यादृष्टि जीव।
३५१	कलं	शरीर।
३५२	किलाविषी	नीच (अपवित्र)
३५३	अनिष्टं	अकल्याणकारी।

३५४	गाहा	गाथा ।
३५५	सामुद्रियं	सामुद्रिक या ज्योतिष।
३५६	सांस निसासं	श्वासोच्छ्वास ।
३५७	चन्दं	चन्द्रमा।
३५८	सूरं	सूर्य।
३५९	गलं	गलना।
३६०	पूरं	पूर्ण होना (पुद्गल)
३६१	दंसण चौविह	दर्शन के ४ भेद हैं— १-चक्षुदर्शन २-अचक्षुदर्शन ३-अवधिदर्शन ४-केवलदर्शन
३६२	अंगयुवाईं	अंग और उपांग।
३६३	ऊर्धसहावं	उच्च स्वभाव धारी।
३६४	विगतोयं	रहित ।
३६५	दंसणं समगं	सम्यग्दर्शन से भरपूर।
३६६	हेयं	त्याग करने योग्य।
३६७	संजदो	संयत (मुनि)
३६८	सरूव-चरण	स्वरूपाचरण चारित्र।

३६९	मन्ततन्तं	मन्त्र तन्त्र।
३७०	तौटक	टोटका आदि।
३७१	टेकं	आदत।
३७२	विवरीऊ	विपरीत या विरक्त।
३७३	घायचवक्कु	घाति चतुष्क।
३७४	चौदस	चौदह।
३७५	तिहुवनग्गं	त्रिभुवनाग्र (सिद्धलोक)
३७६	जदि	यदि ।
३७७	संन्या	संज्ञा चार प्रकारकी होती हैं १- आहारसंज्ञा ३- भयसंज्ञा २-मैथुनसंज्ञा ४-परिग्रहसंज्ञा
३७८	इच्छायारेन	इच्छाकार से, इच्छा करने से
३७९	परखंतो	परीक्षा करे।
३८०	उतखन्तो	नाश करे।
३८१	बोलन्तो	बोले।
३८२	धरयन्तो	धारण करै।
३८३	पीयूसं	अमृत ।

३८४	लीयन्तो	लीन होवै।
३८५	कलियन्तो	शोभायमान।
३८६	लखयन्तो	देखै।
३८७	साहन्ति	साधन करै।
३८८	पोषयन्ती	पोषण करै।
३८९	अगम्य	जहां तक पहुंच नहीं।
३९०	अट्ठामि पुहमि	आठवीं पृथ्वी मोक्ष।
३९१	कज्ज	कार्य।
३९२	छीनन्ति	क्षीण करै।
३९३	सदव्व	स्वद्रव्य।
३९४	अट्टसहावं	आत्म-स्वभाव।
३९५	उपत्ती	उत्पत्ति।
३९६	कलनं	ध्यान या अनुभव।
३९७	आयरणं	आचरणं।
३९८	छेयं	क्षय, छेदन, अन्त।
३९९	गिण्हं	ग्रहण करना।
४००	कम्मवल्ली	कर्मों की बेल।

श्री "त्रिभंगीसार जी" ग्रन्थ के शब्दों का अर्थः-

४०१	त्रिभंगी	तीन २ का समूह।
४०२	दल	समूह।
४०३	त्रिभागं	तीन भाग ।
४०४	सय अठोत्तरं	आठ उपर सौ (एकसौ आठ)
४०५	संग	परिग्रह ।
४०६	अस्त्रियं	स्त्री ।
४०७	निपुंसियं	नपुंसक ।
४०८	लावनं	लावण्य ।
४०९	वृधन्ते	बढ़ते हैं ।
४१०	रसनस्य	जिह्वाइन्द्रिय।
४११	निरोधनं	रोकना।
४१२	खण्डनं	खण्डन करना।
४१३	स्वान्तं	मन में।
४१४	अन्यापायंचविचय – आज्ञा विचय, अपाय विचय आदि।	

४१५ अस्तित्वं सद्भाव ।

४१६ एतातुभावना यह भावना ।

४१७ मुक्ति श्रीयं ध्रुवं, अविचल मोक्ष लक्ष्मी ।

—इति श्री मत्परमपूज्य मंडलाचार्य गुरुवर्य तारण तरणाचार्य विरचित चार आशीर्वाद, तीनबत्तीसी, आचारमत, सारमत के ग्रन्थों का शब्दार्थमय "श्री तारण-शब्द कोष" का प्रथम खंड "क्षुल्लक जयसेन जी महाराज द्वारा संपादित" —

—समाप्त ।
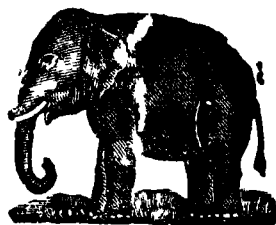
शब्द–सूची

अकारादि के क्रम से नम्बर युक्त, शब्द सूचा

(प्रथम खण्ड)

(अ)

नम्बर।	शब्द।
८	अर्क।
२४	अनुवं।
७३	अचक्षुदर्शन।
७४	अंकुरणं।
८२	असुह।
८६	अन्यानंतन।
८७	अदेवं।

८८	अगुरू ।
८६	अधर्म ।
६६	अन्या ।
१०१	अरजक भाव ।
१०२	अन्मोर्य ।
११६	अप्पा ।
१३३	अधर्म पाश ।
१३४	अदेवं ताडकी ।
१३६	अचेतं ।
१४५	अभ्रपटलं ।
१६३	अनुयोगं ।
१६४	अणुव्रत ।
१७१	अर्ध ।
१७८	अनृतं ।
१८६	अप ।
२००	अभ्यागतं ।
२०२	अनस्तमती ।

२१७	अस्तेयं ।
२१८	अनेयं ।
२२२	अंड ।
२४३	अवकाशं ।
२४८	अणुभागं ।
२७१	अलियं ।
२८०	अयं ।
२९२	अवगाहन ।
२९९	अइसय ।
३०५	अविरइ ।
३०८	अपमत्तो ।
३०९	अपुव्व ।
३१०	अणियत्त ।
३१५	अजोग ।
३३६	अस्मूह ।
३५०	अजिनं ।
३५३	अनिष्टं ।

३६२	अंगयुवाईं ।
३८६	अगम्य ।
३६०	अट्ठामि पुहमि ।
३६४	अद्सहावं ।
४०६	अस्त्रियं ।
४१४	अन्यापायंच विचय ।
४१५	अस्तित्वं ।
५८	ओंकारस्य ।
१३७	आरति ।
२४१	आराहणं ।
२७६	आलाप ।
२७७	आभिंतर ।
२८४	आसन्य भव्व ।
२८५	आमोदर्ज ।
३२६	आकरणि ।
३६७	आयरणं ।

४१	केवलिनो ।
११०	कलरंजन ।
११५	कलिष्ट ।
१२६	कोहाग्नि ।
१४८	कुन्यानं त्रति ।
१५२	कोशी ।
१५५	कषायं ।
१६६	कन्दवीयं ।
१८२	कूड ।
२१६	कमठी ।
२३२	किंचितु ।
२३३	कहंतेन ।
२३७	कदली ।
२८१	कीलय ।
२६५	कुञ्छिय ।
३५१	कलं ।
३५२	किलाविषी ।

३८५	कलियन्तो ।
३६१	कज्ज ।
३६६	कलनं ।
४००	कम्मवल्ली ।

(ख)

२१	खण्ड ।
३४	खिपति ।
१०७	खिपनं ।
२०४	खादं ।
२६६	खिऊ ।
२७४	खिम ।
४१२	खंडनं ।

(ग)

५५	गमन ।
१०५	गलयति ।
१६५	गुणव्रत ।
१६५	गवं ।
२३५	गगनं ।

(झ)

(ट)

९६	त्यक्तं ।
१३०	तिक्तते ।
१४६	तत्वं ।
१५६	तप ।
१७४	तत्र ।
१७५	तत्रिहं ।
१७७	तवं ।
१६०	तेज ।
२२५	ताल की टऊ ।
२७०	तुरियं ।
३४३	तात्र ।
३७०	तोटक ।
३७५	तिहुवनग्गं ।

(द)

५	दिप्तं ।
६	दृष्टिमयं ।
३१	दिसरयणी ।

३६	दिप्ते ।
३६	दिढ़ियो ।
४५	दलं ।
५७	दुःखेन विलयंगता ।
६७	दृष्टं ।
१५१	दब्बं ।
१६०	दान ।
१८७	दुतीय ।
२०१	दात्र ।
२११	देवाले ।
२३६	दिनयरकिरनि ।
२६४	दुःखवीयंमी ।
२७८	दिगम्बर ।
३०६	देसविरदं ।
३६१	दंसण चौविह ।
३६५	दंसणं समगं ।
४०२	दलं ।

(ध)

(न)

३१७	निहारं ।
४०७	निपुंसियं ।
४११	निरोघनं ।

(प)

१०	प्रायोजितं ।
२६	पहरं ।
४३	पेष पिषणं ।
४७	प्रकाशिनो ।
५४	प्रवेश ।
७०	पण्डितो ।
७१	पूजा ।
८१	प्रक्षालितं ।
१०४	प्रजाव ।
११२	परमेष्ठी ।
११३	पंचाचार ।
११४	पयडि ।
११७	पर्जय ।

१२०	परमप्पा ।
१२६	पंचचेल ।
१२७	पादस्थं आदि ।
१५०	पादार्थं ।
१६१	प्रतिमा एकादशं।
१८३	प्रयोजनं ।
१८४	पंचदिप्ती ।
१९९	प्रमोदनं ।
२०६	पीवं ।
२१४	पोसा ।
२३४	प्रबोधनं ।
२३८	पुलिनं ।
२३९	प्रतख्यान ।
२४२	प्राणमुखं ।
२४९	प्रकिर्ति ।
२५०	प्रवेशनं ।
२६९	पुग्गल ।

२८७	प्राछितं ।
२६८	पाछीतो ।
३००	पडिहार ।
३०१	पुहमि ।
३०७	पमत्तो ।
३३५	पण्डिय ।
३४६	पखिक ।
३६०	पूरं ।
३७६	परखंतो ।
३८३	पीयूसं ।
३८८	पोषयन्ती ।

(फ)

१४४	फल सम्पूर्ण ।
२१०	फासू ।
३३८	फटिक–महावं ।

(ब)

६५	बहुभेयं ।

(भ)

(म)

२२३	रेतं ।
२३१	रिसहादि ।
२६७	रई ।
३३६	रोशं ।
४१०	रसनस्य ।

(ल)

४२	लोयालोय ।
७६	लोकितं ।
६३	लंकृत ।
२०७	लेपं ।
२५३	लिस्साऊ ।
३८४	लीयन्तो ।
३८६	लखयन्तो ।
४०८	लावनं ।

(व)

६	विन्द ।
३७	वे, दो ।

६३	विंदस्थानेन ।
६८	विधीयते ।
७५	वीर्यं ।
९०	वेदान्त ।
१०६	विलयं ।
१२३	विन्दु संजुत्त ।
१२४	विश्वलोकं ।
१२५	वित्तरूपी ।
१३५	विकहाजाल ।
१४१	विकहा ।
१४२	विसनं ।
१४३	विदलं ।
१५४	विचत्तणा ।
१८१	वक्कं ।
१९१	वायं ।
१९२	विकलत्रयं ।
२०३	वे घड़ियं ।

२०६	विलङ्घंते ।
२१३	वय ।
२२७	विंचित ।
२४०	विद्यमानो ।
२५८	वाङ्छिल्लं ।
२८२	विरदो ।
२६०	विरयम्मि ।
३४१	वारं ।
३४४	वामंमि ।
३४५	वपु ।
३६४	विगतोयं ।
३७२	विवरीऊ ।
४०६	वृधन्ते ।

श)

६२	शाश्वंत ।
१३२	शल्यं ।
१४०	शुक्लं ।

१३१	सप्तप्रकृति ।
१५६	सम्मत्तं ।
१५८	संयमं ।
१६२	स्वाध्याय ।
१६८	सोडष कारणं ।
१८५	सुयं ।
१८६	संजमं ।
१९७	स्वर्गामिनो ।
२०५	स्वादं ।
२२८	सम उत्पन्निता ।
२२९	समुच्चय ।
२३०	सार ।
२५६	संवेऊ ।
२६२	सोहं ।
२६८	संकप्पवियप्पं ।
२७५	साउच्यं ।
२९१	सूत्र ।

२६४	संवरणं।
३०३	सामरण।
३११	सूत्तम।
३१४	संयोगिजिनं।
३१६	संसारसाइरे।
३२०	सहजोपनीतं।
३२२	सुपयेमो।
३२५	सीसाणं।
३३३	सिचत्ति।
३३७	सुकीय।
३४८	संसारं पषि।
३५५	सामुद्रियं।
३५६	सांस निसामं।
३५८	सूरं।
३६७	संजदो।
३६८	सरूवचरण।
३७७	संन्या।

४०१ त्रिभंगी ।

४०३ त्रिभागं ।

(श्री)

५० श्री संघं जयं ।

—इति श्री तारण शब्द कोष

प्रथम भाग—

अकारादि में शब्द संख्या

नं०	शब्द संख्या	नं०	शब्द संख्या	नं०	शब्द संख्या	नं०	शब्द संख्या
१	अ—५७	११	ज—१७	२१	प—१४	३१	ष—२
२	इ—४	१२	झ—१	२२	फ—३	३२	स—५१
३	उ—२१	१३	ट—२	२३	ब—४	३३	ह—३
४	ए—२	१४	ठ—२	२४	भ—३	३४	क्ष—१
५	क—२३	१५	ड—३	२५	म—१८	३५	त्र—७
६	ख—७	१६	ण—५	२६	य—१	३६	श्री—१
७	ग—१२	१७	त—१७	२७	र—१०		कुल शब्द
८	घ—२	१८	द—२०	२८	ल—८		४१७
९	च—११	१९	ध—४	२९	व—३२		
१०	छ—४	२०	न—१४	३०	श—४		

तारण-शब्द-कोष

(द्वितीय-खण्ड)
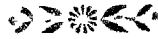
—(२)—

द्वितीय खंड के सम्बंध में

* निवेदन *

दो हजार गाथा, श्लोकादिक से कुछ अधिक का यह " श्री ममल पाहुड ग्रन्थ " के शब्दों का ही चुनाव इस दूसरे खण्ड में किया गया है। वास्तव में यदि विचार किया जावे तो यह ममल पाहुड ग्रन्थ करीब पौने दो सौ ग्रन्थों का संग्रह है। यदि इस ग्रन्थ के एक २ ही फूलना का विस्तृत अर्थ सहित संपादन कर दिया जावे तो बडे २ ग्रन्थ पृथक २ रूप से तैयार हो सकते हैं।

" ममल पाहुड " में शुद्ध चिद्रूप के निज गुणों का ही गान व विलक्षण प्रतिपादन किया

गया है। साथ ही साथ यह विशेषता है कि प्रत्येक ऋतु सम्बन्धी समय २ की रागरागिनियों में इस ग्रन्थ के फूलना रचे गये हैं। तथा कई फूलना ऐसे भी हैं जो तपोवन में विराजमान गुरुदेव के समक्ष जो भी सांसारिक वस्तु नजर में आई कि उसी पर से आध्यात्मिक तरंग में फूलना रच दिया। श्री गुरु तारण स्वामी जी महाराज प्रत्येक बात को निश्चयनय की मुख्यता से प्रतिपादन करते हैं। अध्यात्म-प्रेम के साथ साथ यदि पूरी रागरागिनियों की जानकारी के साथ इस ग्रन्थ का स्वाध्याय किया जावे तो बडा ही आनन्द प्रगट होता है।

इस शब्द कोष में आये हुये कुल शब्द ३१७ हैं जो कि पूरे ग्रन्थ के स्वाध्याय करने में भावार्थ समझने के लिये पर्याप्त हैं। यदि इन दोनों खण्डों के कुल ७३४ शब्दों को समझ लिया जावे तो हम समझते हैं कि कोई भी

फिर १४ ग्रन्थों के समझने में अटक नहीं सकता है ।

प्रत्येक धर्म प्रेमी हमारे परिश्रम को सफल बनाने के लिये इस शब्द कोष का सदुपयोग करेंगे, ऐसी आशा है । तथा संभव है कि किसी शब्द का कोई अर्थ गल्ती लिखा गया हो तो बुद्धिमान सज्जन उसे सुधारने की कृपा करें ।

यदि इस ग्रन्थ का सदुपयोग हुआ तो शीघ्र ही "तीसरे खण्ड" की तैयारी करने की कोशिश की जावेगी ।

—लेखक ।

मूर्खो ऽ वैयाकरणः,
मूकस्तर्क— वर्जितः ।
साहित्य--विदुरः पंगुः,
निर्धनः कोषवर्जितः ॥

अर्थात्— व्याकरण से अनभिज्ञ पुरुष शुद्ध भाषा का ज्ञान न होने के कारण मूर्ख होता है। जिसको न्याय विषय का ज्ञान नहीं उसे गूंगा समझना चाहिये क्योंकि उसे तर्क वितर्क करना नहीं आता। अतः वह शास्त्रार्थ नहीं कर सकता। जिसको साहित्यक ज्ञान नहीं वह गूंगे के समान है और जिसके पास 'कोष' नहीं वह निर्धन है।

इस कारण कोष-ज्ञान अवश्य होना चाहिये ।

॥ श्री परमगुरवे नम. ॥

तारण शब्द-कोष

(द्वितीय खण्ड)

श्री ममल पाहुड़ जी ग्रन्थ का

—: शब्द-कोष :—

१	भय खिपनिक	संसार के सप्त भयों का नाश करने वाला ।
२	ममल-पाहुड	जीवों के भवों को निर्मल करने वाला प्रयोजन भूत यह ग्रंथ; पाहुड़ (सार) या अधिकार ।

३	प्रारभ्यते	प्रारम्भ किया जाता है।
४	देव दिप्ति गाथा	देव के स्वरूप को प्रकाशित करने वाली गाथा।
५	फूलना	जिसके पढ़ने से आत्मा के वास्तविक भाव विकसित हों (या प्रफुल्लित हों) ऐसे भजन
६	नन्द	सम्यग्दृष्टि को प्राप्त होने वाला आत्मिक-सुख।
७	आनन्द	सम्यग्दर्शन सहित एकदेश-चारित्र पालन करते हुये प्राप्त होने वाला आत्मिक सुख।
८	चेयानन्द	सकलचारित्र (मुनि धर्म) को पालन करते हुये, प्राप्त होने वाला आत्मिक सुख।
९	सहजानन्द	क्षपक श्रेणी (कर्मों को क्षय करते गुणस्थान आरोहण) में प्राप्त होने वाला सहजसुख।

१०	परमानन्द	अरहन्त, सिद्ध परमात्म-पद में होने वाला परमानन्द।
११	परमतत्तु	शुद्ध जीव तत्व।
१२	मऊ	मय, सहित, मिला हुआ।
१३	पऊ	पद, पदवी, या प्राप्ति।
१४	विन्दपद	निर्विकल्पदशा, या मोक्षपद।
१५	नमियों	नमस्कार करता हूं।
१६	सहाउ	स्वभाव।
१७	उत्तऊ	कहा गया।
१८	ममल सहाऊ	निर्मल स्वभाव।
१९	समय मऊ	आत्मा में मिला हुआ।
२०	निरंजन	कर्म अंजन से रहित।
२१	भाऊ	भाव, भावना।
२२	परमपय	परम पद।
२३	परमानु	प्रमाण।
२४	भव्वु	भव्य जीव।
२५	मुणहु	जानो, मनन करो।

२६	देउ	देव ।
२७	दिट्ठउ	देखा जावे।
२८	उव	ओंकार या शुद्धात्मा।
२६	उवनउदाता	उपदेश दाता (हितोपदेशी)
३०	जोऊ	देखना या योग मन, वचकाय
३१	भेउ	भेद ।
३२	उत्पन्नउ दाता	जिनवाणी उपदेश-दाता।
३३	शब्द वीवान	शब्द रूप विमान।
३४	सुई	वह ।
३५	दिपि	प्रकाशित ।
३६	अंगदि अंग	प्रत्येक अंग ।
३७	हियार	हृदय प्रदेश ।
३८	भवियनगन	भविजन वृन्द।
३६	अखयरमन	आत्मा में अविनाशी लवलीन पना।
४०	रयणार	रहने वाले।
४१	मौहो मौरं	संसार-भंवर जाल।

४२	विनट्ठीयो	विनाश हो।
४३	केरो	सम्बन्धी ।
४४	पहुन्तियो	पहुचेंगे या प्राप्त करेंगे।
४५	न्यानी	ज्ञानवान ।
४६	मुनियो	मनन करना ।
४७	कलि	पाप ।
४८	कलियो	पापमय।
४९	रइ	रति, रुचि, राग।
५०	रमियो	रमण करना ।
५१	पंचदिपि	पंच परमेष्ठी ।
५२	उद उदियो	हृदय में पूर्ण उदय हो जाना,
५३	संजोगे	संयोग मे।
५४	दिपिदिपियो	दैदीप्यमान प्रकाश ।
५५	यहो	यह ।
५६	लहि लहियो	प्राप्त कर लेना।
५७	मयमइयो	तन्मय हो जाना।
५८	अंग सर्वङ्गह	रोम रोम सर्वाङ्ग।

५६	सुच्छिम	बारीक (सूक्ष्म)
६०	गहि गहियो	ग्रहण करना ।
६१	गगन सहाये	आकाश के समान निर्मल स्वभाव वाला ।
६२	उव उवनौ	आत्म स्वभाव का उदय ।
६३	अन्मोय सुभाये	आनन्द स्वभाव ।
६४	रयण सुभाये	रत्न के समान स्वभाव ।
६५	अर्क विन्द	निर्विकल्प उज्वल प्रकाश ।
६६	सहयार दिप्ति	सहकार ज्योति ।
६७	जिनियऊ	जीत कर ।
६८	ससंक	शंका सहित ।
६९	मुक्तिश्री फूलना	मोक्षलक्ष्मी को प्राप्त करने की प्रेरणा पूर्वक आत्मा को प्रफुल्लित करने वाला फूलना
७०	न्यान सहाये	ज्ञान स्वभाव द्वारा ।
७१	कल लंकृत	शरीर सहित ।

७२	दिट्ठो दीनो	(कर्मों का) देश निकाला या दिसौटा देना। आत्मा रूपी अपने देशसे कर्मों को निकाल बाहर करना।
७३	चरि चरियो	आचरण करना।
७४	तव यरियो	तपाचार स्वीकार करना।
७५	नंद नदियो	आनन्दित होना।
७६	निधि	कर्म।
७७	मुक्ति पहुत्ते	मुक्ति पहूंचे।
७८	गुरु दिप्ति गाथा	गुरुका स्वरूप प्रकाशित करने वाली गाथा (या फूलना)
७९	उवएसिउ	उपदेश देवै।
८०	गुपतरुई	गुप्तरूप (आत्मा)
८१	गुरु–गरवो	गुरु वह जो भारीपन युक्त या गंभीरता सहित।
८२	अमियरसु	अमृत–रस।
८३	उवन्नी	उत्पन्न हुई।

८४	कंष्य	आकांक्षा (इच्छा)
८५	निवृत्ति	छूटना ।
८६	सिष्ट	साधु स्वभावी ।
८७	दिप्ति कान्ति	दैदीप्यमान प्रभा।
८८	चत्तु	त्याग करना ।
८९	अमिय मउ	अमृत मयी।
९०	सिरी	श्री (शोभा) शुभ।
९१	विलन्तु	विलायमान करो।
९२	समुत्पन्निता	समाप्त ।
९३	ध्यावहु गाथा	निरन्तर ध्यान में रखने योग्य उपदेश जिस गाथा मे हो।
९४	भव-संसार	जन्म मरण युक्त संसार।
९५	सुदिट्ठी	सम्यग्दृष्टि ।
९६	भव्यालय	मोक्ष महल।
९७	समयहं	आत्मा में।
९८	उपत्ती	उत्पत्ति।
९९	चष्य	चक्षु।

१००	अचष्य	अचक्षु ।
१०१	अवहि	अवधि ।
१०२	घायकम्मु	घाति कर्म ।
१०३	तुरन्तु	शीघ्र ।
१०४	सहयाऊ	सहयार (सहारा-आश्रय)
१०५	गुपितु अर्क	शुद्ध आत्मा का गुप्त प्रकाश
१०६	अर्क-विन्द	निर्विकल्प प्रकाश ।
१०७	लोउ अलोउ	लोक, अलोक ।
१०८	समल भाव	विभाव परिणति ।
१०९	जम्मन	जन्म लेना ।
११०	मरणु	मरण ।
१११	गहनु	ग्रहण किया हुआ ।
११२	अगहनु	जिसे आज तक ग्रहण नहीं किया ।
११३	पयोहर	समुद्र पयोधर ।
११४	सिवपंथु	शिवपंथ-मोक्ष मार्ग ।

११५	धर्मदिप्त-गाथा	धर्म का स्वरूप प्रकाश करने वाली गाथा।
११६	तंतार फूलना	संसार से पार होने की युक्ति जिस फूलना में समझाई हो वह तन्तार-फूलना।
११७	प्रियो	प्रेममयी।
११८	गरव	गारव-अभिमान।
११९	होलास	उल्लास, (आनन्द)
१२०	तं, जं, जइ हो	वह, जो, जैसे या जहां हो।
१२१	वीइजु	बीज, वीर्य, शक्ति, बल।
१२२	समत्थु	समर्थ।
१२३	विनती फूलना	जिनेन्द्र-स्तवन।
१२४	तुम अन्मोये	तुम्हारे प्रसाद या उपदेश से
१२५	भव्वजियउववे	भव्य जीव जागृत हुये।
१२६	उववे	जागे, सावधान हुये, या अपने कर्तव्य ज्ञान का आत्मा में उदय हुआ।

१२७	चौगइभमत	चार गतियों में भ्रमण करते।
१२८	पत्त	पात्र।
१२९	जिन उत्तगर्भ चौबीसी फूलना	जिनेन्द्रोक्त गर्भ—कल्याणक सम्बन्धी चौबीस गाथा का एक फूलना।
१३०	मुक्तिकलियाओ	मुक्ति सहित शोभायमान।
१३१	सीय	सिद्ध, शीघ्र, शीतल, शीत।
१३२	षट्रमण	षट्कमल-ध्यान।
१३३	जंभरियो तं-	जितना ज्ञान आत्मा में प्रवेश हो उतना ही आचरण (चारित्र) हो।
१३४	अवतरियो	अवतार लेना।
१३५	ऊर्ध ध्यान	उत्कृष्ट निज ध्यान।
१३६	स्रोवर	सरोवर।

नोट— इस जिन उत्तगर्भ चौबीसी फूलना में, जम्बूद्वीप के छह कुलाचलों पर जो छह सरोवर हैं और उनमें जो छह कमल हैं तथा उन कमलों पर जो छह

देवियां हैं उनका वर्णन है। वे देवीं जिनेन्द्र के गर्भ कल्याणक में आती हैं और माता की सेवा करके अपना जन्म सफल करती हैं।

छह कुलाचल (पर्वत)	छह सरोवर	छह देवियां
१- हिमवान पर्वत।	१- पद्म।	१- श्री।
२- महाहिमवान पर्वत।	२- महापद्म।	२- ह्री।
३- निषध पर्वत।	३- तिगिञ्छ।	३- धृति।
४- नील पर्वत।	४- केशरी।	४- कीर्ति।
५- रुक्मी पर्वत।	५- महापुण्डरीक	५- बुद्धि।
६- शिखरी पर्वत।	६- पुण्डरीक।	६- लक्ष्मी

१३७	पात्र निरुपण फूलना	तीन पात्रोंका कथन जिसमें हो
१३८	जहिन पत्तु	जघन्य पात्र।
१३९	मति समय संजुत्तु	सम्यग्दर्शन संयुक्त।
१४०	सहायार समय	आत्मा का ही सहारा।
१४१	समऊ	समय (शुद्धात्मा)

१४२	दात्रपात्र त्रिशेष फूलना	दाता व पात्र का विशेष निरूपण जिसमें है।
१४३	चेतकहियरा फूलना	हृदय को सावधान करने का वर्णन जिसमें है।
१४४	बेदक हियरा	अनुभवी हृदय।
१४५	त्रिन्दक हियरा	निर्विकल्प हृदय।
१४६	सुन्यानी	सम्यग्ज्ञानी।
१४७	उत्तुरिना	कहा।
१४८	मैमूरति	स्वयं रूप।
१४९	गारव त्रिटंबना	जनरंजनादि में अभिमान-पूर्वक प्रवृत्ति।
१५०	असमय	पर पदार्थ।
१५१	अन्धकुवय	अन्धकूप।
१५२	उत्पन्न छन्द	जिनवाणी महिमा जिसमें हो
१५३	उत्तऊ	कहा गया।
१५४	जुत्तऊ	युक्त, संयुक्त, सहित।
१५५	रत्तऊ	लवलीन।

१५६	सत्तऊ	सत्य-युक्त ।
१५७	गयेउ	गया ।
१५८	अवंकऊ	सरल ।
१५६	सिउ समय	थोडे काल में ।
१६०	दरसन चौबीसी	चार दर्शन कथन चौबीसी
१६१	न्यान लब्धि	ज्ञान की प्राप्ति ।
१६२	विपर्जैय	विपरीत ।
१६३	विवर	छिद्र ।
१६४	कमल विद छन्द	निर्विकल्प आत्म-कथन ।
१६५	मुनन्तु	मनन करना चाहिये ।
१६६	गिरा	वाणी ।
१६७	सुवनी	सुबुद्धि । और दूसरा अर्थ है— श्राविका ।
१६८	गिराछंद फूलना	इस छन्द में अपनी जिह्वा-इन्द्रिय से किस प्रकार क्या क्या कार्य लेना चाहिये इसका

		वर्णन अच्छी तरह किया है [गिरा–वाणी]
१६९	चवंतु	चर्वण करना, चबाना, बोलना ।
१७०	बिंदरउ फूलना	निजानन्द रसलीन फूलना।
१७१	बिन्दरम	निर्विकल्प समाधि समुत्पन्न आत्म–सुख ।
१७२	वउजुतउ	तप युक्त।
१७३	गरुलहु	अगुरुलघु ।
१७४	भयभिउ	भयभीत ।
१७५	भुल्लि	भूल ।
१७६	भुलिया	भूल गया।
१७७	पर्जयविय	पर्याय का बीज।
१७८	भमन	भ्रमण ।
१७९	जिनयति	जीतता है।
१८०	जिनय	जीत कर ।

१८१	जिन	चतुर्थगुणस्थान वर्ती जीवों को आदि लेकर चौदहवें गुण-स्थान-वर्ती जीवों को 'जिन' कहते हैं।
१८२	जिनंदपउ	जिनेन्द्र पद।
१८३	विन्यान विद	भेदविज्ञान रूप निर्विकल्पता।
१८४	अनंतभउ	अनन्तभव (जन्म)
१८५	जव तव	जप, तप।
१८६	दर्शन मोहंध	श्रद्धान को भ्रष्ट करने वाले मोहनीय कर्म से अंधे हुये।
१८७	अदिष्ट इष्ट	मिथ्यादर्शन।
१८८	सिउ	शीघ्र।
१८९	निर्मोहयं	निर्मोही।
१९०	कार्न-काज	कारण कार्य।
१९१	चष्ये	चक्षु।
१९२	आचरण	सम्यकचारित्र।
१९३	इत्थं	इस प्रकार।

१९४	विर्जय	वीर्य (शक्ति)
१९५	उवन	उदय, उपदेश, अनुभव कथन व्याख्यान, सम्यक्त्व साव-धान, जागृत आदि इस 'उवन' शब्द के जैसा प्रकरण हो उसके अनुसार अनेक अर्थ हैं।
१९६	भणेई	कहा है।
१९७	परिनवई	परिणत होता है, (परिणमन)
१९८	मुत्ति गउ	मुक्ति प्राप्त।
१९९	तउ	वह।
२००	जिनयउ	जीते।
२०१	अर्थह भेउ	पदार्थ भेद।
२०२	उवलब्धु	प्राप्त।
२०३	उवनऊ दाता	उपदेश दाता।
२०४	अन्मोयह	अनुमोदना- आल्हाद, भक्ति आनन्द, कृपा, सहारा आदि

		इस अन्मोयह शब्द के भी प्रकरणानुसार अनेक अर्थ हाते हैं।
२०५	संजुत्त	संयुक्त।
२०६	परमार्थ जकड़ी	मोक्षमार्ग में लगाने वाला फूलना।
२०७	कमल	कमल, आत्मा, कर्म-मल रहित अतिनिर्मल आदि अनेक अर्थ।
२०८	संखिपनं	अच्छी तरह खिपा देना (नष्ट कर देना)
२०९	हितमित परिनै	हित मित परिणति।
२१०	भवियन्नं	भव्यजन।
२११	गयन्द	हाथी।
२१२	कमलविशेषगाथा	आत्मा की विशेषताका कथन करने वाली गाथा।
२१३	संसुद्ध	विशुद्ध।

२१४	जिनुवयन	जिनवचन ।
२१५	अव्यय	अविनाशी ।
२१६	सिद्ध संपत्तयऊ	सिद्धि सम्पदा ।
२१७	उत्तनमाह	विजयी आत्मा ।
२१८	इष्ट शब्द	कल्याणकारी वचन ।
२१९	परदिष्टि	परपरिणति ।
२२०	तरुवा	विरवा, वृक्ष ।
२२१	तं अर्क विद	वह निर्विकल्प प्रकाश ।
२२२	तालु छन्द	जिस छन्द के बोलने में तालु-स्थान से विशेष सम्बन्ध हो ।
२२३	कंठ छन्द	कंठ से विशेषतया सम्बन्धित छन्द ।
२२४	हिययार छन्द	हृदय-ग्राही छन्द ।
२२५	अर्हं	परमेष्ठी-ब्रह्म वाचक ।
२२६	अरुइ	अरहन्त ।
२२७	संसर्ग	सम्बन्ध, संयोग ।
२२८	रुचियं	रुचिकर ।

२२६	अरिनं	अरि, (शत्रु)
२३०	नन्दी	आनन्दितात्मा ।
२३१	उपत्ती	उत्पत्ति ।
२३२	अन्मोय, विरोह	राग, द्वेष ।
२३३	बिनती	विनययुक्त प्रार्थना ।
२३४	इय	यह ।
२३५	ब्रिन्द	बृन्द (समूह)
२३६	रमणपऊ	रमण करने योग्य पद ।
२३७	निकन्दनो	जड से उखाड डालना ।
२३८	निरूपियं	निरूपण किया ।
२३९	बिहंडनो	त्याग करना ।
२४०	खण्डनौ	खण्डन करना ।
२४१	अनुरत्तऊ	अनुरक्त होना ।
२४२	अवलम्बनौ	सहारा लेना ।
२४३	जिनेन्द्रबिन्द	जीवन मुक्त ।
२४४	उवन	प्रकरणवश इस शब्द का अर्थ यह भी हो सकता है कि

'रत्नत्रयमयी आत्मा ।'

२४५	सबद वियार	शब्द विचार ।
२४६	तारणतरणसहावं	स्वपर कल्याणकर्ता ।
२४७	भवयनं	भव्यजन ।
२४८	सदिष्ट, अदिष्ट	देखा विना देखा ।
२४६	अनेय	अनेक ।
२५०	अवलोय	अवलोकन ।
२५१	आलस	आलस्य (प्रमाद)
२५२	विसमय	आश्चर्य (विस्मय)
२५३	इत	यहां ।
२५४	सर्वार्थ सिद्धि	समस्त प्रयोजन की सिद्धि ।
२५५	गुण निहाण	गुण निधान ।
२५६	रिष्ट	मलिन ।
२५७	निहकलंकऊ	निष्कलङ्क ।
२५८	निरिखणं	निरीक्षण ।
२५६	तिथ्ययरं	तीर्थंकर ।
२६०	उवनो	कथन किया ।
२६१	अमिय सरूवे	अमृतमय ।

२६२	अमियन वयन	कोमल वचन।
२६३	गम्ममऊ फूलना	निज गम्य गुण परिचायक।
२६४	देहालै	देह मन्दिर।
२६५	सिद्धालै	शुद्धात्मा का निवास स्थान।
२६६	भेऊ	भेद।
२६७	मुक्ति गवै	मोक्ष जावै।
२६८	समइ	समय (आत्मा)।
२६९	उदहि	उदधि (समुद्र)।
२७०	जोतिरमै	निज प्रकाश में रमण।
२७१	न्यान अन्मोय	ज्ञान सामर्थ्य।
२७२	अवगति	अव्यक्त।
२७३	अगम्म	अशक्य।
२७४	सप्तस्वर गाथा	जिन गाथाओं में षड्ज, ऋषभादि सात स्वरों का वर्णन हो
२७५	बिजोरोदे	बीजारोपण कर।
२७६	पयोधर	मेघ या समुद्र।
२७७	आयरो	आचरण करो या आदरो

		(स्वीकार करो)
२७८	उछिय	उच्छिष्ट (जूठन)।
२७६	सिरी	श्री (शोभायमान)
२८०	आकिर्ण	कर्णेन्द्रिय (कान)
२८१	निर्वानं	निर्वाण (मोक्ष)।
२८२	हुवयार	स्वीकार या होने वाला।
२८३	सुहगम्यरमण	शुभ धर्म ध्यान का वर्णन करने वाला फू० या सहज-गम्य।
२८४	कमलगिरा	मुखारविन्द की वाणी।
२८५	सचेयणु	सचेतन।
२८६	ललित राहावे	प्रिय स्वभाव।
२८७	बिवांन	विमान।
२८८	सेहरो	शेखर, मुकुट, मौलि।
२८६	अबलबली	निर्बल के बलदाता।
२६०	सहसं अट्ठामि	एक हजार आठ।
२६१	दिपि कर्णि	दैदीप्यमान कर्णिका।

२९२	सौ एक अट्ठ	एक सौ आठ।
२९३	समुत्पन्निता	समाप्ता।
२९४	भोहह भवह	सांसारिक भय।
२९५	अहकार	आत्म-खोज।
२९६	समल कम्म	मलिन कर्म।
२९७	असकंध	स्कंध (स्थूल)।
२९८	निरते सूवा	जीव रूपी तोता।
२९९	सियधुव	सिद्धध्रुव।
३००	सहेसा	सहर्ष स्वीकारता।
३०१	वाहुल	विह्वल।
३०२	उमाहो	उमंग युक्त।
३०३	मेवाड़ी छंद	मेवाड देशमें चालू राग वाला छंद।
३०४	संसर्ग-सोलही	निश्चय में कुटुम्बी कौन हैं यह निर्णय इस फूलना में किया गया है।
३०५	चितनौटा	मन।

३०६	स्रेनि	श्रेणि ।
३०७	जिननाह	जिननाथ ।
३०८	सुयं	स्वयं या श्रुतं।
३०९	पय	पद ।
३१०	पयोग	उपयोग १२ (आठ ज्ञान चार दर्शन ।
३११	पुन्ज	समूह ।
३१२	नयोग	नियोग।
३१३	सहयार	सहकारी ।
३१४	सुइ	सोई ।
३१५	आनन्द समय	चिदानन्द ।
३१६	पियारो	प्रिय ।
३१७	जिनतारण	सम्यग्दृष्टि श्री तारण-तरणाचार्य ।

—इति—
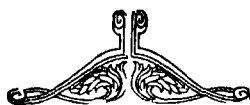
तारण शब्द कोष द्वितीय खण्ड—

समाप्त

—•—

दीपावली

२४६६

जिनवरचरण चंचरीक—

क्षुल्लक—जयसेन

श्री १०८ श्री निसई जी (मल्हारगढ़)

शब्द-सूची

तारण-शब्द-कोष

(द्वितीय-खंड)

—को—

अकारादिवर्णानुक्रमानुसार—

शब्द-सूची

(अ)

शब्द नम्बर	शब्द ।
३६	अंगादि अंग ।
३६	अखयरमन ।
५८	अंग सर्वज्ञह ।

६३	अन्मोय सुभाये ।
६५	अर्क-विन्द ।
८२	अमियरसु ।
८६	अमियमऊ ।
१००	अचष्य ।
१०१	अत्रहि ।
१०६	अर्क-विन्द ।
११२	अगहनु ।
१३४	अवतरियो ।
१५०	असमय ।
१५१	अन्धकुवय ।
१५८	अवंकऊ ।
१८४	अनन्तु भउ ।
१८७	अदिष्ट इष्ट ।
२०१	अर्थहभेउ ।
२०४	अन्मोयह ।
२१५	अन्यय ।

(क)

(ख)

(ग)

(च)

१६२	बिपर्जय ।
१६३	बिवर ।
१७०	बिन्दरउ फूलना ।
१७१	बिन्दरस ।
१८३	बिन्यान बिन्द ।
१६४	बिर्जय ।
२३३	बिनती ।
२३५	बिन्द ।
२३६	बिहएडनौ ।
२७५	बिजौरोदे ।
२८७	बिवान ।
१४४	बेदक हियरा ।

(भ)

१	भयखिपनिक ।
२४	भव्वु ।
३८	भवियनगन ।
६४	भव—संसार ।

(म)

—इति—

तारण शब्द-कोष—

समाप्त ।

❋— अन्त-मंगल —❋

मंगलमय जिनराज हैं,

जिनवाणी, जिनसाधु ।

मंगल तारण तरण जिन—

शुद्ध तत्व आराधु ॥१॥

तारणतरणाचार्य—कृत—

ग्रन्थनि के कछु शब्द ।

अर्थ सहित संग्रह यहां—

शब्द ज्ञान हो लब्ध ॥२॥

भैया श्री रतिचन्द्र जी—

इनको अतिशय प्रेम ।

शब्दकोष में, याहि तें—

लिख्यौ ग्रन्थ यह नेम ॥३॥

ज्ञानार्थी जन लाभ लें—

'तारण-ग्रन्थ' विलोक ।

शब्द कोष तें सरलता –
होय, वृद्धि गुण थोक ॥४॥
उन्नी सौ छयानव यहां—
सम्वत् कार्तिक मास ।
मंगलमय दीपावली—
'इति श्री ग्रन्थ' समाप्त ॥५॥
परम परम आनन्द-मय—
चातुर्मास व्यतीत ।
क्षेत्र निसई मंगल मयी।
निर्जनता की रीत ॥६॥
तीर्थभक्त श्रीमान् शुभ—
कुन्दनलाल तथैव ।
लघु-भ्राता युत आपके—
ग्रन्थ प्रकाशन लैव ॥७॥
उक्त सेठ श्रीमान् के—
मेला में यह ग्रन्थ ।
भेंट रूप वितरण भयो--

धन्य धन्य शुभ पंथ ॥८॥

मन्त्री जी श्री धर्म रवि—

भूषण कहैं समाज ।

श्री गुलाबचन्द्रादि वर—

सज्जन शैली साज ॥९॥

शब्द, शब्द में कोष के—

निजानन्द प्रगटाय ।

यह वे ही जाने सुधी—

जिन्हें निजातम भाय ॥१०॥

बाल बुद्धि अनुसार यह—

शब्द-कोष लघु ग्रन्थ ।

भूल चूक क्षमियो सुजन—

परख सु 'तारण पंथ' ॥११॥

बालबुद्धि क्षुल्लक मती—

विनय करै जयसैन ।

शांति शांति शुभ शान्ति दें—

श्री जिनवर के बैन ॥१२॥

हर्ष ! हर्ष !! परम हर्ष !!!

अपूर्व—

तारण साहित्य का प्रकाशन

१ तारण शब्द कोष– यह आपके कर कमलों मे है।

२ आचार मत (दोहा पद्यानुवाद)

३ विचारमत (छन्द पद्यानुवाद)

४ तारणतरण – श्रावक स्वरूप।

५ तारणतरण – धर्मोपदेश।

६ तारणतरण आशीर्वाद।

७ तारणतरण द्वादशानुप्रेक्षा।

८ तारण झंडा संगीत (द्वितीया०)

९ अष्टमूलगुण।

१० तारणतरण भजनमाला।

११ तत्व मंगलाचरण का अर्थ—

और

जय अचल बली--जिनेन्द्र स्तवन।

१२ तारणतरण आरती संग्रह।

१३ तारणस्तोत्र (संस्कृत)

१४ विश्व शान्ति के पांच उपाय।

१५ तारण गुण जाप्यमाला।

१६ तारण साहित्य पर शुभ सम्मतियां।

१७ तारण तत्व प्रकाश।

१८ तारण तरण प्रतिष्ठापाठ।

१९ तारण तरण समाधि मरण पाठ।

२० तारणतरण – सामायिक पाठ।

२१ तारण तरण श्रावक प्रतिक्रमण पाठ।

२२ तारण तरण दर्शन – पाठ।

२३ तारण तरण नित्य पाठ।

२४ आहारदान -- विधि।

२५ ग्यारह शिक्षा -- (फार्म) ।

२६ सामायिक विधि -- (फार्म) ।

२७ तारण तरण भाव पूजा ।

२८ तारण तरण – जीवन चरित्र ।

जैन धर्म भूषण, धर्म दिवाकर ब्र० शीतलप्रसाद जी द्वारा संपादित – तारण साहित्य

१ तीनों बत्तीसी – (पृथक २)

२ तारण तरण श्रावकाचार ।

३ ज्ञान समुच्चयसार ।

४ उपदेश शुद्धसार ।

५ त्रिभगीसार ।

६ चौबीस ठाणा ।

७ ममल – पाहुड़ जी (तीन भाग)

अभीतक—प्रकाशित

तारण साहित्य के प्रकाशक महाशयों

की

शुभ – नामावली

१ श्रीमान् दानवीर सेठ मन्नूलाल जी आगासौद ।

२ श्रीमान् दानवीर सिघई हीरालाल जी सिंगोडी ।

३ श्री तारणतरण चैत्यालय सागर सी० पी० ।

४ समाज सेवक श्रीमान् भाई मथुराप्रसाद जी सागर

५ श्री तारण समाज होशंगाबाद ।

६ श्रीमान् लालदास गुलाबचन्द जी ललितपुर ।

७ श्रीमान् सेठ मुरलीधर जी मेहगूलाल जी सिरोंज ।

८ श्रीमान् सेठ कुन्दनलाल जी हजारीलाल जी
मम्मदगढ़ बासौदा ।

९ श्रीमान् भाई पन्नालाल जी राहतगढ़ ।

१० श्रीमान् फूलचन्द गुरुप्रसाद जी टिमरणी ।

११ श्रीमान् भाई हजारीलाल जी विहारीलाल जी
बड़ा बाजार सागर।

१२ सेठ जमनादास जी पन्नालाल जी मिर्जापुर।

१३ सेठ झब्बूलाल जी पन्नालाल जी ऊभेगांव।

१४ सेठ जीतमल जी सिगोड़ी।

१५ श्रीमान् गणेशसाव जी सिंगोड़ी।

१६ दानभूषण रतीचन्द रामलाल जी बासोदा।

१७ श्रीमान् चुन्नीलाल जवाहरलाल जी बासौदा।

१८ श्रीमान् दयाचन्द नाथूराम जी खुरई।

१९ बड़कुर कालूराम जी बीना।

२० श्रीमान् भाई कालूराम जी पौनार।

२१ नवयुवक मंडल छिंदवाड़ा।

२२ अखिल भारतीय न० यु० मंडल इटारसी।

२३ श्री ताराचन्द जी प्यारेलाल जी मूडरा।

२४ भाई किशोरीलाल जी सागर।

शीघ्र—

प्रकाशित होगी !

श्रीमान् "कविभूषण" बाबू

अमृतलाल जी 'चञ्चल'

—कृत—

(पद्यानुवादमय)

"तारण-त्रिवेणी"

प्रतीक्षा कीजिये ।

कृपया—

प्रत्येक छपे हुये—

ग्रन्थ पुस्तक फार्म आदि

धार्मिक साहित्य को—

विनय पूर्वक सम्हाल

कर रखिये ।

भविष्य में काम आवेगा

तारण समाजकी चालू संस्थायें

१ श्री तारणतरण पाठशाला बासौदा (गंज)
२ श्री तारणतरण गुरुकुल छिन्दवाडा।
३ श्री तारणतरण विद्यालय कुरुडा ।
४ श्री तारणतरण पाठशाला फुटेरा (दमोह)
५ श्री तारणतरण जैन पाठशाला इटारसी।
६ श्री तारणतरण भारतीय नवयुवक मंडल बाम्बई।
७ श्री तारणतरण नवयुवक मंडल छिन्दवाड़ा।
८ श्री तारणतरण सेवा-संघ फुटेरा।
९ श्री छिन्दवाडा प्रान्तीय नवयुवक मडल।
१० श्री शीतल वाचनालय बाम्बई।
११ श्री ता० त० कुमार वाचनालय कुडा (छिंदवाडा)
१२ श्री जयसेन लायब्रेरी छिन्दवाडा।
१३ श्री तारणतरण नाटक मंडल सिलवानी।
१४ श्री तारण ध्वनि-मडली अमरवाडा।
१५ अखिल भारतीय बाल समाज छिन्दवाड़ा।

२००) रु० पारितोषिक

उस लेखक को मिलेंगे जो प्राचीन ग्रंथोंसे

शिलालेखों से, तथा गवर्नमेंट के

पुराने रिकार्डोंसे, रियासतों

के पुराने रिकार्डोंसे

श्री गुरु—

तारणतरणाचार्य महाराज का

प्रामाणिक

जीवन-चरित्र पूरा पूरा :—

लिख कर तैयार करेगा।

इसके अतिरिक्त:-

उसका वह ग्रन्थ प्रकाशित भी कराया जावेगा।

निवेदक :—

(दानवीर) सिं० हीरालाल नोखेलालजी

सिंगोड़ी (छिन्दवाड़ा)

मनाइये !

श्रीतारण-जयन्ती और

श्रीतारण-समाधि दिवस

प्रति-वर्ष

मनाने का ध्यान रखिये।

—तथा—

मनुष्य मात्र को—

श्री गुरु के पवित्र-उपदेश उद्देश्य

सुनाइये।